आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:11-18-14

अपनी ईश्वरीय श्रीमत् से हम आसुरी आत्माओं को देवी-देवता बनाने वाले, परमपिता-परमात्मा बाप ने कहा, मीठे बच्चे - यदि शिवबाबा का कदर है तो उनकी श्रीमत् पर चलते रहो, श्रीमत् पर चलना माना बाप का कदर करना.

शिवबाबा की सबसे पहली श्रीमत् है - अपने आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मांतर के पाप भस्म हो जायेंगे. फिर बाप से मिलने बाले वर्से को भी याद करो तो तुम्हारे में देवी-गुण भी धारण होगे और सतयुग में आयेंगे.

श्रीमत् पर चल-कर आज की मुरली से बाबा ने याद और वर्से के लिए जीतने भी पॉइन्टस कहे है उसे हम अपनी आत्मिक अवस्था में रहकर पढ़ेंगे तो हमारे में बाप और वर्से की याद पक्की होती जायेगी.

बाप की याद के लिए कहे गये महा-वाक्यों -

- रुहानी विचित्र बाप बैठ विचित्र बच्चों को समझाते हैं अर्थात दूरदेश का रहने वाला जिसको परमपिता परमात्मा कहा जाता है. बहुत-बहुत दूरदेश से आकर इस शरीर द्वारा तुमको पढ़ाते है. यह है विचित्र बाबा.

- बाप कहते हैं - हे रुहानी बच्चों, यह तुम्हारा बाप भी है, टीचर भी है, गुरु भी है, इनके साथ योग रखो अर्थात बाप को याद करो. पढ़ाने वाले से योग रखने से तुम्हारे पाप भस्म हो जायेंगे.

- बाप कहते हैं सिर्फ मुझे याद करो. इस याद के बल से ही तुम्हारे पाप कटने हैं, इसको कहा जाता है याद की यात्रा.

- अब रुहानी विचित्र बाप बच्चों को देखते हैं. बच्चे भी अपने को आत्मा समझ विचित्र बाप को ही याद करते हैं.

- बाबा कहते है, तुम तो घड़ी-घड़ी शरीर में आते हो. मैं तो सारा कल्प शरीर में आता ही नहीं हूँ सिर्फ इस संगमयुग पर ही बहुत दूरदेश से आता हूँ - तुम बच्चों को पढ़ाने.

- यह अच्छी रीति याद करना है कि बाप हमारा बाप, टीचर और सतगुरु है. विचित्र है. उनको अपना शरीर नहीं. बाबा कहते है, बच्चों को याद रखना है कि हम को विचित्र बाप पढ़ाते हैं. बाप को याद करने से ही हमारे पाप भस्म होंगे.

- यहाँ तुम्हें कैसा विचित्र बाप मिला है जिसको याद करने से तुम्हारे पाप भस्म हो जायेंगे और अपने घर चले जायेंगे.

- बाबा कहते है, बाप आते देखो कहॉ है, पुराने रावण राज्य में. कहते हैं मेरी तकदीर में पावन शरीर मिलना है नहीं. पतितो को पावन बनाने कैसे आऊं. हम को पतित दुनिया में आकर ही सबको पावन बनाना हैं. तो ऐसे बाप की श्रीमत् पर एक्युरेंट चलना चाहिए.

- बाबा आप कितने विचित्र हो. कैसे आकर हम पतितों को पावन बनाने के लिए पढ़ाते हो. भक्ति मार्ग में हम आपकी ही पूजा करते थे लेकिन समझते नहीं थे. फिर भी कहते थे - हे पतित-पावन आओ, आकर हमें गुल-गुल देवी-देवता बनाओ. अब आकर हमें आपने ही श्रीमत दी की - बच्चे, अब पवित्र बनो. अब हम आपकी ही श्रीमत पर चल करके पवित्र जरूर बनेंगे.

वर्से की याद के लिए कहे गये महा-वाक्यों -

- शिवबाबा हमारा बाप भी है तो बच्चा भी है. हम सब कुछ इस बच्चे को वर्सा देकर और बाप से २१ जन्मो के लिए वर्सा लेते है. किचड़पट्टी सब देकर बाप से हम बादशाही लेते हैं.

- बाबा हमें इस पढाई से लक्ष्मी-नारायण जैसे देवी-देवता बनाते है. अहो बाबा, आप तो हमें कितने ऊँच बनाते हो. इसे याद करते ही हमारी आँखों से प्रेम के आंसू बहते हैं. शुक्रिया बाबा शुक्रिया  आप का लाख-लाख शुक्रिया.

ॐ शांति.